Faizane Azaan (Hindi)

फ़ैज़ाने अज़ान

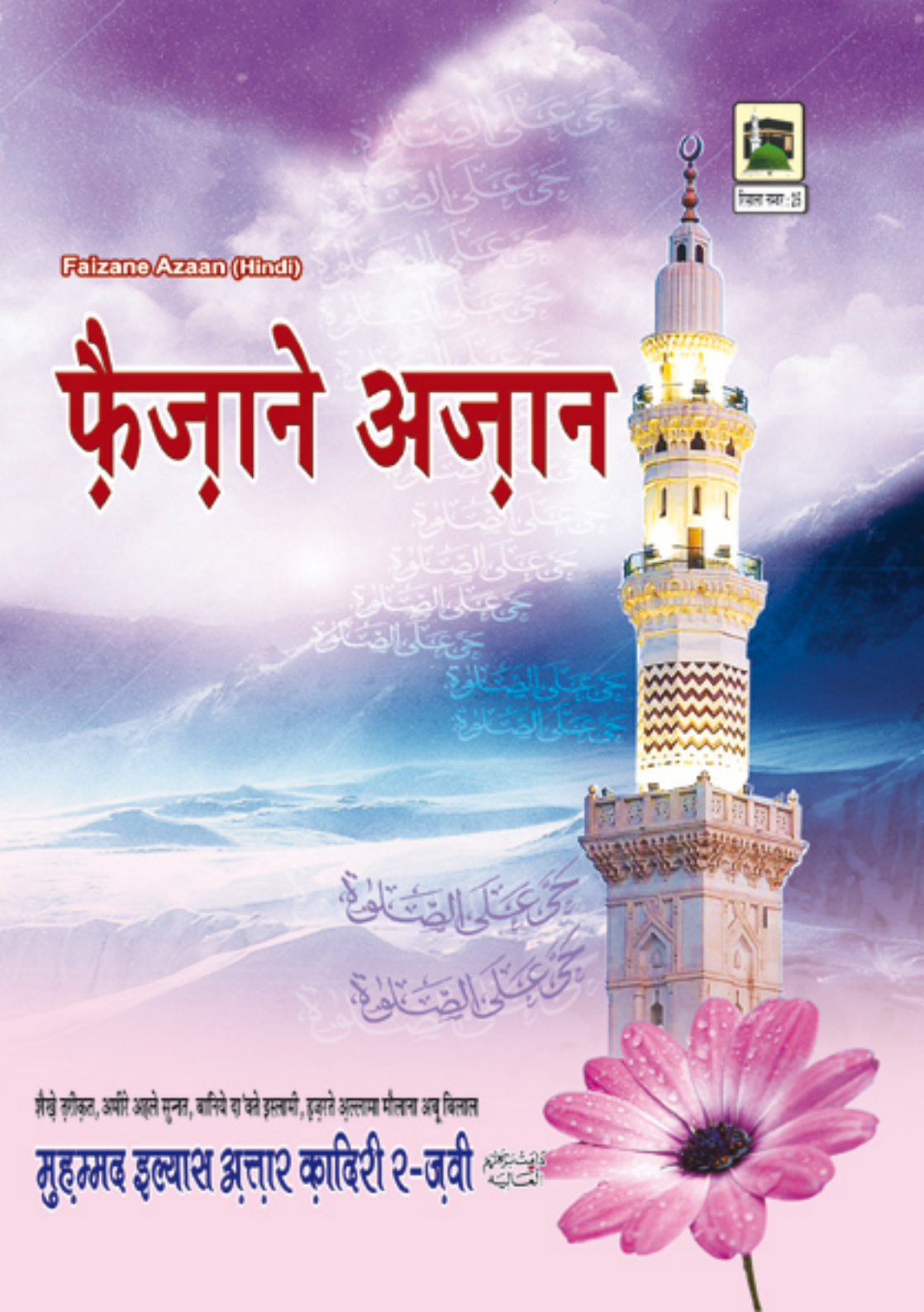

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ैज़ाने अज़ान

येह रिसाला (**फ़ैज़ाने अज़ान**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने अज़ान

(मअ़ 3 करोड़ 24 लाख नेकियां रोज़ाना कमाइये)

येह रिसाला (31 सफ़ह़ात) अव्वल ता आख़िर पूरा पढ़िये, क़वी इम्कान है कि आप की कई ग़-लतियां सामने आ जाएं ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : जिस ने क़ुरआने पाक पढ़ा, रब तआ़ला की ह़म्द की और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा नीज़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब की तो उस ने भलाई को अपनी जगह से तलाश कर लिया ।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۳۷۳ حدیث۲۰۸٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार अज़ान दी

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़र में एक बार अज़ान दी थी और कलिमाते शहादत यूं कहे : اَشْهَدُ اَنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰه (मैं गवाही देता हूं कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं) ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 375, **تُحفَۃُ المُحتاج، ج۱ص۲۰۹**

आज़ान है या अज़ान ?

बा'ज़ लोग ''आज़ान'' कहते हैं येह ग़लत़ तलफ़्फ़ुज़ है। आज़ान जम्अ़ है ''उज़ुन'' की और उज़ुन के मा'ना हैं : कान। दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ अज़ान है। अज़ान के लुग़वी मा'ना हैं : ख़बरदार करना।

''फ़ैज़ाने अज़ान'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से अज़ान के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 9 अह़ादीसे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ क़ब्र में कीड़े नहीं पड़ेंगे

सवाब की ख़ात़िर अज़ान देने वाला उस शहीद की मानिन्द है जो ख़ून में लिथड़ा हुवा है और जब मरेगा क़ब्र में उस के जिस्म में कीड़े नहीं पड़ेंगे। **(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج۱۲ص۳۲۲حدیث ۱۳۵۵٤)**

﴾2﴿ मोती के गुम्बद

मैं जन्नत में गया, उस में **मोती के गुम्बद** देखे उस की ख़ाक मुश्क की है। पूछा : ऐ जिब्रईल ! येह किस के वासिते़ हैं ? अ़र्ज़ की : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के **मुअज़्ज़िनों** और इमामों के लिये।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص۲۵۵حدیث ٤۱۷۹)

﴾3﴿ गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़

जिस ने पांचों नमाज़ों की अज़ान ईमान की बिना पर ब निय्यते सवाब कही उस के जो गुनाह पहले हुए हैं मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो ईमान की बिना पर सवाब के लिये अपने साथियों की पांच नमाज़ों में इमामत करे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

उस के गुनाह जो पहले हुए हैं मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

(اَلسُّنَنُ الکُبری لِلْبَیْہَقِی ج۱ص۶۳۶ حدیث ۲۰۳۹)

﴾4﴿ शैत़ान 36 मील दूर भाग जाता है

''शैत़ान जब नमाज़ के लिये अज़ान सुनता है भागता हुवा रौह़ा पहुंच जाता है।'' रावी फ़रमाते हैं : रौह़ा मदीनए मुनव्वरह से 36 मील दूर है। (مُسلِم ص۲۰۴ حدیث ۳۸۸ مُلَخَّصاً)

﴾5﴿ अज़ान क़बूलिय्यते दुआ़ का सबब है

जब अज़ान देने वाला अज़ान देता है आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दुआ़ क़बूल होती है। (اَلْمُستَدرَك لِلْحاکِم ج۲ ص۲۴۳ حدیث۲۰۴۸)

﴾6﴿ मुअज़्ज़िन के लिये इस्तिग़फ़ार

मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहां तक पहुंचती है, उस के लिये मग़फ़िरत कर दी जाती है और हर तर व ख़ुश्क जिस ने उस की आवाज़ सुनी उस के लिये **इस्तिग़फ़ार** करती है। (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج ۲ ص ۵۰۰ حدیث ۶۲۱۰)

﴾7﴿ अज़ान वाले दिन अ़ज़ाब से अम्न

जिस बस्ती में अज़ान दी जाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अ़ज़ाब से उस दिन उसे अम्न देता है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی ج۱ ص۲۵۷ حدیث ۷۴۶)

﴾8﴿ घबराहट का इलाज

जब आदम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) जन्नत से हिन्दुस्तान में उतरे उन्हें घबराहट हुई तो जिब्रईल (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) ने उतर कर अज़ान दी।

(حِلْیَۃُ الْاولیاء ج۵ ص ۱۲۳ حدیث ۶۵۶۶)

﴾9﴿ ग़म दूर करने का नुस्ख़ा

ऐ अ़ली ! मैं तुझे ग़मगीन पाता हूं अपने किसी घर वाले से कह कि तेरे कान में अज़ान कहे, अज़ान ग़म व परेशानी की दाफ़ेअ़ है। (جامع الحديث لِلسُّيُوطی ج١٥ ص ٣٣٩ حديث ٦٠١٧) येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़" जिल्द 5 सफ़्हा 668 पर फ़रमाते हैं : मौला अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) और मौला अ़ली तक जिस क़दर इस ह़दीस के रावी हैं सब ने फ़रमाया : **فَجَرَّبْتُهُ فَوَجَدْتُهُ كَذٰلِكَ** (हम ने इसे तजरिबा किया तो ऐसा ही पाया)।

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج٢ ص٣٣١، جامِعُ الحديث ج١٥ ص ٣٣٩ حديث ٦٠١٧)

मछलियां भी इस्तिग़फ़ार करती हैं

मन्क़ूल है : अज़ान देने वालों के लिये हर चीज़ मग़्फ़िरत की दुआ़ करती है यहां तक कि दरिया में मछलियां भी। **मुअज़्ज़िन** जिस वक़्त अज़ान कहता है फ़िरिश्ते भी दोहराते जाते हैं और जब फ़ारिग़ हो जाता है तो फ़िरिश्ते क़ियामत तक उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं। जो **मुअज़्ज़िनी** की ह़ालत में मर जाता है उसे अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होता और **मुअज़्ज़िन** नज़्अ़ की सख़्तियों से बच जाता है। क़ब्र की सख़्ती और तंगी से भी मामून (या'नी मह़फ़ूज़) रहता है।

(मुलख़्ख़स अज़ तफ़्सीरे सूरए यूसुफ़ (मुतर्जम), स. 21)

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार फ़रमाया :

ऐ औ़रतो ! जब तुम बिलाल को **अज़ान व इक़ामत** कहते सुनो तो जिस त़रह़ वोह कहता है तुम भी कहो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये हर कलिमे के बदले **एक लाख** नेकियां लिखेगा और **एक हज़ार** द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और **एक हज़ार** गुनाह मिटाएगा। ख़वातीन ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : येह तो औ़रतों के लिये है मर्दों के लिये क्या है ? फ़रमाया : मर्दों के लिये दुगना।

(تاریخ دِمشق لابنِ عَساکِر ج ۵۵ ص ۷۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 करोड़ 24 लाख नेकियां रोज़ाना कमाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान ! उस ने हमारे लिये नेकियां कमाना, अपने द-रजात बढ़वाना और गुनाह बख़्शवाना किस क़दर आसान फ़रमा दिया है मगर अफ़्सोस ! इतनी आसानियों के बा वुजूद भी हम ग़फ़्लत का शिकार रहते हैं। पेश कर्दा ह़दीसे मुबारक में **जवाबे अज़ान व इक़ामत** की जो फ़ज़ीलत बयान हुई है उस की तफ़्सील मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

''اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر'' येह दो कलिमात हैं, इस त़रह़ पूरी अज़ान में कुल **15 कलिमात** हैं। अगर कोई इस्लामी बहन एक **अज़ान** का जवाब दे या'नी **मुअज़्ज़िन** साह़िब जो कहते जाएं इस्लामी बहन भी दोहराती जाए तो उस को **15 लाख** नेकियां मिलेंगी, **15 हज़ार** द-रजात बुलन्द होंगे और **15 हज़ार** गुनाह मुआ़फ़ होंगे और इस्लामी भाइयों के लिये येह सब दुगना है। **फ़ज्र** की अज़ान में दो मर्तबा اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم भी

है तो यूं **फ़ज्र** की अज़ान में **17 कलिमात** हो गए और इस त़रह़ **फ़ज्र** की अज़ान के जवाब में **17 लाख** नेकियां, 17 हज़ार द-रजात की बुलन्दी और 17 हज़ार गुनाहों की मुआ़फ़ी मिली और इस्लामी भाइयों के लिये दुगना। **इक़ामत** में दो मर्तबा قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوة भी है यूं इक़ामत में भी 17 कलिमात हुए तो इक़ामत के जवाब का सवाब भी फ़ज्र की अज़ान के जवाब जितना हुवा। **अल ह़ासिल अगर कोई इस्लामी बहन एहतिमाम के साथ रोज़ाना पांचों नमाज़ों की अज़ानों और पांचों इक़ामतों का जवाब देने में काम्याब हो जाए तो उसे रोज़ाना एक करोड़ बासठ लाख नेकियां मिलेंगी, एक लाख बासठ हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे और एक लाख बासठ हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे और इस्लामी भाई को दुगना या'नी 3 करोड़ 24 लाख नेकियां मिलेंगी, 3 लाख 24 हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे और 3 लाख 24 हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे।**

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक साहिब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मौजू-दगी में (ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद) फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह तआ़ला** ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग मु-तअ़ज्जिब हुए क्यूं कि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न

था । चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के घर गए और उन की बेवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह **अज़ान** सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे । (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٤٠ ص ٤١٢،٤١٣ مُلَخَّصاً) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गु-नहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ुव्व तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा

मुअज़्ज़िन साह़िब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें । اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر (यूं दो कलिमात हैं मगर) दोनों मिल कर (बिग़ैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से) एक कलिमा हैं, दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ते की मिक़्दार येह है कि जवाब देने वाला जवाब दे ले, सक्ते का तर्क मक्रूह है और ऐसी अज़ान का इआ़दा (या'नी लौटाना) मुस्तह़ब है । (دُرِّمُختار وردُّالمُحتار ج٢ص٦٦) जवाब देने वाले को चाहिये कि जब **मुअज़्ज़िन** साह़िब اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर सक्ता करें या'नी ख़ामोश हों उस वक़्त اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر कहे । इसी त़रह़ दीगर कलिमात का

जवाब दे। जब **मुअज़्ज़िन** पहली बार اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे येह कहे :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه (तरजमा : आप पर दुरूद हो **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم))

जब दोबारा कहे, येह कहे :

قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه (**या रसूलल्लाह !** आप से मेरी आंखों की ठन्डक है)

और हर बार अंगूठों के नाख़ुन आंखों से लगा ले, आख़िर में कहे :

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَر (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी सुनने और देखने की क़ुव्वत से मुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमा) **(رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸٤)**

حَيَّ عَلَى الْفَلَاح और حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة के जवाब में (चारों बार) لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे और बेहतर येह है कि दोनों कहे (या'नी **मुअज़्ज़िन** ने जो कहा वोह भी कहे और **लाहौल** भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :

مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَالَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُن (तरजमा : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा) **(دُرِّمُختار وردُّالمُحتار ج۲ ص۸۲، عالمگیری ج۱ ص۵۷)**

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم के जवाब में कहे :

صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ (तरजमा : तू सच्चा और नेकूकार है और तूने ह़क़ कहा है) **(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۳)**

इक़ामत का जवाब मुस्तह़ब है। इस का जवाब भी इसी त़रह़ है फ़र्क़ इतना है कि قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃ के जवाब में कहे :

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْض (तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को क़ाइम रखे जब तक आस्मान और ज़मीन हैं) **(عالمگیری ج۱ ص ۵۷)**

"सदक़े या रसूलल्लाह" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से अज़ान के 14 म-दनी फूल

۞ **पांचों** फ़र्ज़ नमाज़ें इन में जुमुआ भी शामिल है जब जमाअ़ते ऊला के साथ मस्जिद में वक़्त पर अदा की जाएं तो उन के लिये अज़ान **सुन्नते मुअक्कदा** है और इस का हुक्म मिस्ले वाजिब है कि अगर अज़ान न कही गई तो वहां के तमाम लोग गुनहगार होंगे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 464)

۞ **अगर** कोई शख़्स शह्र के अन्दर घर में नमाज़ पढ़े तो वहां की मस्जिद की अज़ान उस के लिये काफ़ी है मगर अज़ान कह लेना मुस्तह़ब है।

(رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۶۲، ۷۸)

۞ **अगर** कोई शख़्स शह्र के बाहर या गाउं, बाग़ या खेत वग़ैरा में है और वोह जगह क़रीब है तो गाउं या शह्र की अज़ान काफ़ी है फिर भी अज़ान

कह लेना बेहतर है और जो क़रीब न हो तो काफ़ी नहीं। क़रीब की ह़द येह है कि यहां की अज़ान की आवाज़ वहां पहुंचती हो। **(عالمگیری ج۱ص۵٤)**

۞ **मुसाफ़िर** ने अज़ान व इक़ामत दोनों न कही या इक़ामत न कही तो मक्रूह है और अगर सिर्फ़ इक़ामत कह ली तो कराहत नहीं मगर बेहतर येह है कि अज़ान भी कह ले। चाहे तन्हा हो या इस के दीगर हमराही वहीं मौजूद हों। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 471, **دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۲ص۷۸**)

۞ **वक़्त** शुरूअ़ होने के बा'द अज़ान कहिये अगर वक़्त से पहले कह दी या वक़्त से पहले शुरूअ़ की और दौराने अज़ान वक़्त आ गया दोनों सूरतों में अज़ान दोबारा कहिये **(الهداية ج۱ص٤٥)** **मुअज़्ज़िन** साह़िबान को चाहिये कि वोह नक़्शए **निज़ामुल अवक़ात** देखते रहा करें। कहीं कहीं **मुअज़्ज़िन** साह़िबान वक़्त से पहले ही अज़ान शुरूअ़ कर देते हैं। इमाम साह़िबान और इन्तिज़ामिया की ख़िदमत में भी म-दनी इल्तिजा है कि वोह भी इस मस्अले पर नज़र रखें।

۞ **ख़वातीन** अपनी नमाज़ अदा पढ़ती हों या क़ज़ा इस में इन के लिये अज़ान व इक़ामत कहना मक्रूह है। **(دُرِّمُختار ج۲ص۷۲)**

۞ **औरतों** को जमाअ़त से नमाज़ अदा करना, **ना जाइज़** है।

(**ایضاًص۳٦۷**, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 584)

۞ **समझदार** बच्चा भी अज़ान दे सकता है। **(دُرِّمُختار ج۲ص۷۵)**

۞ **बे वुज़ू** की अज़ान सह़ीह़ है मगर बे वुज़ू का अज़ान कहना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, **مَراقی الْفَلاح ص٤٦**)

۞ **ख़ुन्सा**, फ़ासिक़ अगर्चे आ़लिम ही हो, नशे वाला, पागल, बे ग़ुस्ला और ना समझ बच्चे की अज़ान मक्रूह है। इन सब की अज़ान का इआ़दा किया जाए। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, دُرِّمُختار ج۲ص۷۵)

۞ **अगर मुअज़्ज़िन** ही इमाम भी हो तो बेहतर है। (دُرِّمُختار ج۲ص۸۸)

۞ **मस्जिद** के बाहर क़िब्ला रू खड़े हो कर, कानों में उंग्लियां डाल कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान कही जाए मगर त़ाक़त से ज़ियादा आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 468, 469, عالمگیری ج۱ص۵۵)

अज़ान में उंग्लियां कान में रखना मस्नून व मुस्तह़ब है मगर हिलाना और घुमाना ह़-र-कते फ़ुज़ूल है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 373)

۞ حَیَّ عَلَی الْفَلَاح सीधी त़रफ़ मुंह कर के कहे और حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ उलटी त़रफ़ मुंह कर के, अगर्चे अज़ान नमाज़ के लिये न हो म-सलन बच्चे के कान में कही। येह फिरना फ़क़त़ मुंह का है सारे बदन से न फिरे। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۶, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 469) बा'ज़ **मुअज़्ज़िनीन** "सलाह" और "फ़लाह़" पर पहुंचने पर नज़ाकत के साथ दाएं बाएं चेहरे को थोड़ा सा हिला देते हैं, येह त़रीक़ा ग़लत़ है। दुरुस्त अन्दाज़ येह है कि पहले अच्छी त़रह़ दाएं बाएं चेहरा कर लिया जाए इस के बा'द लफ़्ज़ "**ह़य्य**" कहने की इब्तिदा हो।

۞ **फ़ज्र** की अज़ान में حَیَّ عَلَی الْفَلَاح के बा'द اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم कहना मुस्तह़ब है। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۷) अगर न कहा जब भी अज़ान हो जाएगी। (क़ानूने शरीअ़त, स. 89)

''अज़ाने बिलाली'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से जवाबे अज़ान के 9 म-दनी फूल

۞ **अज़ाने** नमाज़ के इ़लावा दीगर अज़ानों का जवाब भी दिया जाएगा म-सलन बच्चा पैदा होते वक़्त की अज़ान । (رَدُّالْمُحتار ج۲ص۸۲) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान बाएं (उलटे) में तक्बीर कहे कि ख़-लले शैत़ान व **उम्मुस्सिब्यान** से बचे । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 452) ''**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**'' सफ़ह़ा 417 ता 418 पर है : ''(सअ़) बहुत ख़बीस बला है और इसी को उम्मुस्सिब्यान कहते हैं अगर बच्चों को हो, वरना सअ़ (मिर्गी) ।''

۞ **मुक़्तदियों को ख़ुत़्बे** की अज़ान का जवाब हरगिज़ न देना चाहिये येही अह़्वत़ (या'नी एह़तियात़ से क़रीब) है। हां अगर येह जवाबे अज़ान या (दो ख़ुत़्बों के दरमियान) दुआ़, अगर दिल से करें, ज़बान से तलफ़्फ़ुज़ (या'नी अल्फ़ाज़ अदा करना) अस्लन (या'नी बिल्कुल) न हो तो कोई ह़रज नहीं। और इमाम या'नी ख़त़ीब अगर ज़बान से भी जवाबे अज़ान दे या दुआ़ करे बिला शुबा जाइज़ है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 300, 301)

۞ **अज़ान** सुनने वाले के लिये अज़ान का जवाब देने का हुक्म है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 472) जुनुब (या'नी जिसे जिमाअ़ या एह़तिलाम की वजह से ग़ुस्ल की ह़ाजत हो) भी अज़ान का जवाब दे। अलबत्ता ह़ैज़ व निफ़ास वाली औ़रत, ख़ुत़्बा सुनने वाले, नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वाले, जिमाअ़ में

मश्ग़ूल या जो क़ज़ाए ह़ाजत में हों उन पर जवाब नहीं। (دُرِّمُختار ج۲ص۸۱)

❁ **जब** अज़ान हो तो उतनी देर के लिये सलाम व कलाम और जवाबे सलाम और तमाम काम मौक़ूफ़ कर दीजिये यहां तक कि तिलावत भी, अज़ान को ग़ौर से सुनिये और जवाब दीजिये। इक़ामत में भी इसी त़रह़ कीजिये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473, دُرِّمُختار ج۲ص۸۶، عالمگیری ج۱ص۵۷مُلَخّصاً)

❁ **अज़ान** के दौरान चलना, फिरना, बरतन, गिलास वग़ैरा कोई सी चीज़ उठाना, खाना वग़ैरा रखना, छोटे बच्चों से खेलना, इशारों में गुफ़्त-गू करना वग़ैरा सब कुछ मौक़ूफ़ कर देना ही मुनासिब है।

❁ **जो** अज़ान के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रहे उस का مَعَاذَاللّٰه ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473)

❁ **रास्ते** पर चल रहा था कि अज़ान की आवाज़ आई तो (बेहतर येह है कि) उतनी देर खड़ा हो जाए (चुपचाप) सुने और जवाब दे। (عالمگیری ج۱ص۵۷، ایضاً) हां दौराने अज़ान मस्जिद या वुज़ूख़ाने की त़रफ़ चलने और वुज़ू करने में कोई ह़रज नहीं इस दौरान ज़बान से जवाब भी देते रहिये।

❁ अज़ान के दौरान इस्तिन्जा ख़ाने जाना बेहतर नहीं क्यूं कि वहां अज़ान का जवाब न दे सकेगा और येह बहुत बड़े सवाब से मह़रूमी है, अलबत्ता शदीद ह़ाजत हो या जमाअ़त जाने का अन्देशा हो तो चला जाए।

❁ **अगर** चन्द अज़ानें सुने तो इस पर पहली ही का जवाब है और बेहतर येह है कि सब का जवाब दे। (دُرِّمُختار وردُّالمُحتار ج۲ص۸۲, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473) अगर ब वक़्ते अज़ान जवाब न दिया तो अगर ज़ियादा देर

न गुज़री हो तो जवाब दे ले। **(دُرِّمُختار ج۲ص۸۳)**

"या मुस्त़फ़ा" के सात हुरूफ़ की निस्बत से इक़ामत के 7 म-दनी फूल

❁ **इक़ामत** मस्जिद में इमाम के ऐन पीछे खड़े हो कर कहना बेहतर है अगर ऐन पीछे मौक़अ़ न मिले तो सीधी त़रफ़ मुनासिब है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 372)

❁ **इक़ामत** अज़ान से भी ज़ियादा ताकीदी सुन्नत है। **(دُرِّمُختار ج۲ص۶۸)**

❁ **इक़ामत** का जवाब देना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473)

❁ **इक़ामत** के कलिमात जल्द जल्द कहें और दरमियान में सक्ता मत कीजिये। (ऐज़न, स. 470)

❁ **इक़ामत** में भी حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ और حَیَّ عَلَی الْفَلَاح में (सफ़ह़ा 11 पर बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़) दाएं बाएं मुंह फेरिये। **(دُرِّمُختار ج۲ص۶۶)**

❁ **इक़ामत** उसी का ह़क़ है जिस ने अज़ान कही है, अज़ान देने वाले की इजाज़त से दूसरा कह सकता है अगर बिग़ैर इजाज़त कही और **मुअज़्ज़िन** (या'नी जिस ने अज़ान दी थी उस) को ना गवार हो तो मक्रूह है।

(عالمگیری ج۱ص۵۴)

❁ **इक़ामत** के वक़्त कोई शख़्स आया तो उसे खड़े हो कर इन्तिज़ार करना मक्रूह है बल्कि बैठ जाए इसी त़रह़ जो लोग मस्जिद में मौजूद हैं वोह भी बैठे रहें और उस वक़्त खड़े हों जब **मुकब्बिर** حَیَّ عَلَی الْفَلَاح पर पहुंचे येही हुक्म इमाम के लिये है।

ایضاًص۵۷, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 471)

''मेरे ग़ौसे आ'ज़म'' के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से अज़ान देने के 11 मुस्तह़ब मवाक़ेअ़

﴾1﴿ बच्चे ﴾2﴿ मग़मूम ﴾3﴿ मिर्गी वाले ﴾4﴿ ग़ज़ब नाक और बद मिज़ाज आदमी और ﴾5﴿ बद मिज़ाज जानवर के कान में ﴾6﴿ लड़ाई की शिद्दत के वक़्त ﴾7﴿ आतश ज़-दगी (आग लगने) के वक़्त ﴾8﴿ मय्यित दफ़्न करने के बा'द ﴾9﴿ जिन्न की सरकशी के वक़्त (म-सलन किसी पर जिन्न सुवार हो) ﴾10﴿ जंगल में रास्ता भूल जाएं और कोई बताने वाला न हो उस वक़्त । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, رَدُّالْمُحتار ج۲ص۶۲) नीज़ ﴾11﴿ वबा के ज़माने में भी अज़ान देना मुस्तह़ब है ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 466, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 370)

मस्जिद में अज़ान देना ख़िलाफ़े सुन्नत है

आज कल अक्सर मस्जिद के अन्दर ही अज़ान देने का रवाज पड़ गया है जो कि ख़िलाफ़े सुन्नत है । ''आ़लमगीरी'' वग़ैरा में है अज़ान ख़ारिजे मस्जिद में कही जाए मस्जिद में अज़ान न कहे । **(عالمگیری ج۱ص۵۵) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एक बार भी साबित नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिद के अन्दर अज़ान दिलवाई हो। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : मस्जिद में अज़ान देनी मस्जिद व दरबारे इलाही की गुस्ताख़ी व बे अ-दबी है। सेह़्ने मस्जिद के नीचे जहां जूते उतारे जाते हैं वोह जगह ख़ारिजे मस्जिद होती है वहां अज़ान देना बिला तकल्लुफ़ मुत़ाबिक़े सुन्नत है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 408, 411, 412) जुमुआ़ की अज़ाने सानी जो आज कल (ख़ुत़्बे से क़ब्ल) मस्जिद में ख़त़ीब के मिम्बर के सामने मस्जिद के अन्दर दी जाती है येह भी ख़िलाफ़े सुन्नत है, जुमुआ़ की अज़ाने सानी भी मस्जिद के बाहर दी जाए मगर मुअज़्ज़िन ख़त़ीब के सामने हो।

सो शहीदों का सवाब कमाइये

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एह़याए सुन्नत उ़-लमा का तो ख़ास **फ़र्ज़े मन्सबी** है और जिस मुसल्मान से मुम्किन हो उस के लिये हुक्म आ़म है, हर शह्‌र के मुसल्मानों को चाहिये कि अपने शह्‌र या कम अज़ कम अपनी अपनी मसाजिद में (पांचों नमाज़ों की अज़ान और जुमुआ़ की अज़ाने सानी मस्जिद के बाहर देने की) इस सुन्नत को ज़िन्दा करें और सो सो शहीदों का सवाब लें। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जो फ़सादे उम्मत के वक़्त

मेरी सुन्नत को मज़्बूत़ थामे उसे सो शहीदों का सवाब मिले ।" (اَلزُّھْدُ الْکَبِیر لِلْبَیْہَقِی ص۱۱۸ حدیث۲۰۷, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 403) इस मस्अले की तफ़्सील के लिये फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 5 "**बाबुल अज़ाने वल इक़ामह**" का मुता-लआ फ़रमाइये ।

अज़ान से पहले येह दुरूदे पाक पढ़िये

अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर दुरूदो सलाम के येह सीगे़ पढ़ लीजिये **:**

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ الله

फिर दुरूदो सलाम और अज़ान में फ़स्ल (या'नी गेप) करने के लिये येह ए'लान कीजिये **:** "**अज़ान का एह़तिराम करते हुए गुफ़्त-गू और कामकाज रोक कर अज़ान का जवाब दीजिये और ढेरों नेकियां कमाइये ।**" इस के बा'द अज़ान दीजिये दुरूदो सलाम और इक़ामत के दरमियान मस्जिद में येह ए'लान कीजिये **:** "**ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये, मोबाइल फ़ोन हो तो बन्द कर दीजिये ।**" अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल तस्मिया और दुरूदो सलाम के मख़्सूस सीग़ों की म-दनी इल्तिजा इस शौक़ में कर रहा हूं कि इस त़रह़ मेरे लिये भी कुछ सवाबे जारिय्या का सामान हो जाए और फ़स्ल (या'नी गेप रखने) का मश्वरा **फ़तावा र-ज़विय्या** के फ़ैज़ान से पेश किया है । चुनान्चे एक

इस्तिफ़्ता के जवाब में इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''दुरूद शरीफ़ क़ब्ले इक़ामत पढ़ने में ह़रज नहीं मगर इक़ामत से फ़स्ल (या'नी फ़ासिला या अ़ला-ह़-दगी) चाहिये या दुरूद शरीफ़ की आवाज़, आवाज़े इक़ामत से ऐसी जुदा (म-सलन दुरूद शरीफ़ की आवाज़ इक़ामत की ब निस्बत कुछ पस्त) हो कि इम्तियाज़ रहे और अ़वाम को दुरूद शरीफ़ जुज़्ए इक़ामत (या'नी इक़ामत का ह़िस्सा) न मा'लूम हो।''

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 386)

वस्वसा : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी और दौरे ख़ु-लफ़ाए राशिदीन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ा जाता था लिहाज़ा ऐसा करना बुरी बिद्अ़त और गुनाह है। (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

जवाबे वस्वसा : अगर येह क़ाइदा तस्लीम कर लिया जाए कि जो काम उस दौर में नहीं होता था वोह अब करना बुरी बिद्अ़त और गुनाह है तो फिर फ़ी ज़माना निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा। बे शुमार मिसालों में से फ़क़त़ 12 मिसालें पेश करता हूं कि येह काम उस मुबारक दौर में नहीं थे और अब इन को सब ने अपनाया हुवा है : ﴾1﴿ क़ुरआने पाक पर नुक़्त़े और ए'राब ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने 95 सि.हि. में लगवाए ﴾2﴿ इसी ने ख़त्मे आयात पर अ़लामात के त़ौर पर नुक़्त़े लगवाए ﴾3﴿ क़ुरआने पाक की छपाई ﴾4﴿ मस्जिद के वस्त़ में इमाम के खड़े रहने के लिये त़ाक़ नुमा मेह़राब पहले न थी वलीद मरवानी के दौर में ह़ज़रते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيْظ ने ईजाद की। आज कोई मस्जिद इस से ख़ाली नहीं ﴾5﴿ छ⁶ कलिमे ﴾6﴿ इ़ल्मे सर्फ़ व नह़्व ﴾7﴿ इ़ल्मे ह़दीस और अह़ादीस की अक़्साम ﴾8﴿ दर्से निज़ामी ﴾9﴿ शरीअ़त व त़रीक़त के चार सिल्सिले ﴾10﴿ ज़बान से नमाज़ की निय्यत ﴾11﴿ हवाई जहाज़ के ज़रीए़ सफ़रे ह़ज ﴾12﴿ जदीद साइन्सी हथियारों के ज़रीए़ जिहाद। येह सारे काम उस मुबारक दौर में नहीं थे लेकिन अब इन्हें कोई गुनाह नहीं कहता तो आख़िर अज़ान व इक़ामत से पहले मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदो सलाम** पढ़ना ही क्यूं बुरी बिद्अ़त और गुनाह हो गया ! याद रखिये किसी मुआ़-मले में अ़-दमे जवाज़ की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है। यक़ीनन, यक़ीनन, यक़ीनन हर वोह नई चीज़ जिस को शरीअ़त ने मन्अ़ नहीं किया वोह बिद्अ़ते ह़-सना और मुबाह़ या'नी अच्छी बिद्अ़त और जाइज़ है और येह अम्रे मुसल्लम है कि अज़ान से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ने को किसी भी ह़दीस में मन्अ़ नहीं किया गया लिहाज़ा मन्अ़ न होना ख़ुद ब ख़ुद "इजाज़त" बन गया और अच्छी अच्छी बातें इस्लाम में ईजाद करने की तो ख़ुद मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है और "मुस्लिम" के बाब "किताबुल इ़ल्म" में सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने इजाज़त निशान मौजूद है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

مَنْ سَنَّ فِی الْاِ سْلَامِ سُنَّۃً حَسَنَۃً فَعُمِلَ بِھَا بَعْدَہٗ کُتِبَ لَہٗ مِثْلُ اَجْرِ مَنْ عَمِلَ بِھَا وَلَایَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِھِمْ شَیْءٌ ۔

जिस शख़्स ने मुसलमानों में कोई नेक त़रीक़ा जारी किया और उस के बा'द उस त़रीक़े पर अ़मल किया गया तो उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों का अज्र भी उस (या'नी जारी करने वाले) के नामए आ'माल में लिखा जाएगा और अ़मल करने वालों के अज्र में कमी नहीं होगी। (صَحیح مُسلِم ص۱٤۳۷حدیث۱۰۱۷)

मत़लब येह कि जो इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा जारी करे वोह बड़े सवाब का ह़क़दार है तो बिला शुबा जिस ख़ुश नसीब ने अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल दुरूदो सलाम का रवाज डाला है वोह भी सवाबे जारिय्या का मुस्तह़िक़ है, क़ियामत तक जो मुसल्मान इस त़रीक़े पर अ़मल करते रहेंगे उन को भी सवाब मिलेगा और जारी करने वाले को भी मिलता रहेगा और दोनों के सवाब में कोई कमी नहीं होगी।

हो सकता है किसी के ज़ेह्न में येह **वस्वसा** आए कि ह़दीसे पाक में है : کُلُّ بِدْعَۃٍ ضَلَالَۃٌ وَّ کُلُّ ضَلَالَۃٍ فِی النَّار या'नी हर बिद्अ़त (नई बात) गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है। (صَحیح اِبن خُزَیمہ ج۳ص۱٤۳حدیث۱۷۸۵) इस ह़दीस शरीफ़ के क्या मा'ना हैं ? इस का जवाब येह है कि ह़दीसे पाक ह़क़ है। यहां बिद्अ़त से मुराद **बिद्अ़ते सय्यिअह** या'नी बुरी बिद्अ़त है और यक़ीनन हर वोह बिद्अ़त बुरी है जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ या सुन्नत को मिटाने वाली हो। चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो बिद्अ़त उसूल और क़वाइ़दे सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को **बिद्अ़ते ह़-सना** कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़त गुमराही कहलाती है। **(اَشِعَّةُ اللَّمعات ج ۱ ص ۱۳۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अब ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते हुए **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा 359 ता 362 का मज़्मून मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : अज़ान की **तौहीन** करना कैसा ?

जवाब : अज़ान शआ़इरे इस्लाम में से है। किसी भी शिआ़रे इस्लाम की तौहीन कुफ़्र है।

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ का मज़ाक़ उड़ाना

सुवाल : अज़ान में حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ (या'नी आओ नमाज़ की त़रफ़) या حَیَّ عَلَی الْفَلَاح (या'नी आओ भलाई की त़रफ़) सुन कर मज़ाक़ में येह कहना कैसा कि : **''आओ सिनेमा घर की त़रफ़ वरना टिकटें ख़त्म हो जाएंगी !''**

जवाब : कुफ़्र है। क्यूं कि مَعَاذَاللّٰه येह अज़ान का मज़ाक़ उड़ाना हुवा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की ख़िदमते बा ब-र-कत में **सुवाल** हुवा : जनाब का क्या इर्शाद है इस मस्अले में कि ज़ैद ने **मुअज़्ज़िने** मस्जिद की अज़ान के साथ तमस्ख़ुर (या'नी मज़ाक़) किया या'नी लफ़्ज़ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ सुन कर यूं **मुज़्ह़का** (या'नी मज़ाक़) उड़ाया : "भय्या लठ चला।" आया ज़ैद के लिये हुक्मे इरतिदाद व सुकूते निकाह़ साबित हुवा या नहीं ? और ज़ैद का निकाह़ टूटा या नहीं ? اِلخ। **अल जवाब :** अज़ान से इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ करना) ज़रूर **कुफ़्र** है अगर अज़ान ही से उस ने इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़) किया तो बिला शुबा **काफ़िर** हो गया, उस की औ़रत उस के **निकाह़** से निकल गई, येह अगर फिर मुसल्मान हो और औ़रत उस से निकाह़ करे उस वक़्त वती (या'नी हम-बिस्तरी) ह़लाल होगी वरना ज़िना। और औ़रत अगर बिला इस्लाम व निकाह़ उस से क़ुरबत पर राज़ी हो वोह भी ज़ानिया है। और अगर **अज़ान** से इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ उड़ाना) मक़्सूद न था बल्कि ख़ास उस **मुअज़्ज़िन** से ब-ईं वजह (या'नी इस वजह से) कि वोह ग़लत़ पढ़ता है इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़) किया तो इस ह़ालत में (न काफ़िर होगा न निकाह़ टूटेगा मगर) ज़ैद को तज्दीदे इस्लाम व तज्दीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 215)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

अज़ान के मु-तअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात की 8 मिसालें

﴾1﴿ जो **अज़ान** का मज़ाक़ उड़ाए वोह **काफ़िर** है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 102)

﴾2﴿ **अज़ान** की तह़क़ीर करते हुए कहना कि "घन्टी की आवाज़ नमाज़ की इत्तिलाअ़ देने के लिये ज़ियादा अच्छी है" **कुफ़्र** है।

﴾3﴿ जो **अज़ान** देने वाले को **अज़ान** देने पर कहे : "तूने झूट बोला" ऐसा शख़्स **काफ़िर** हो गया। (فتاوٰی قاضی خان ج٤ ص ٤٦٧)

﴾4﴿ जिस ने किसी **मुअज़्ज़िन** के बारे में **अज़ान** के मज़ाक़ के तौर पर कहा : येह कौन मह़रूम है जो **अज़ान** कह रहा है ? या ﴾5﴿ **अज़ान** के बारे में कहा : ग़ैर मा'रूफ़ सी आवाज़ है या कहा : ﴾6﴿ अज्नबियों की आवाज़ है, येह तमाम अक़्वाल **कुफ़्र** हैं। या'नी जब कि बतौरे तह़क़ीर (ह़क़ारत) कहे। (مِنَحُ الرَّوض الاَزهَر لِلقاری ص ٤٩٥)

﴾7﴿ एक ने **अज़ान** कही दूसरा मज़ाक़ उड़ाने के लिये दोबारा **अज़ान** कहे तो उस पर **हुक्मे कुफ़्र** है। (مَجْمَعُ الاَنْهُر ج٢ ص٥٠٩)

﴾8﴿ **अज़ान** सुन कर येह कहना : क्या शोर मचा रखा है ! अगर येह क़ौल ख़ुद अज़ान को ना पसन्द करने की वजह से कहा हो तो **कुफ़्र** है।

(عالمگیری ج٢ص٢٦٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

अज़ान

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط	اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط
अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है	**अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ط	اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ط
मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं	मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط	
मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं	
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط	
मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं	
حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ط	حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ط
नमाज़ पढ़ने के लिये आओ	नमाज़ पढ़ने के लिये आओ
حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ط	حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ط
नजात पाने के लिये आओ	नजात पाने के लिये आओ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط	
अल्लाह सब से बड़ा है **अल्लाह** सब से बड़ा है	
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ط	
अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं।	

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابو یعلٰی)

अज़ान की दुआ

अज़ान के बा'द मुअज़्ज़िन व सामिईन दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ ط وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ ط اٰتِ سَيِّدَنَا

ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इस दा'वते ताम्मा और सलाते क़ाइमा के मालिक, तू हमारे सरदार

مُحَمَّدَ انِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ ط وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ ط وَابْعَثْهُ مَقَامًا

हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को वसीला और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द द-रजे अ़ता फ़रमा, और उन को मक़ामे

مَّحْمُوْدَ انِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ ط وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط

महमूद में खड़ा कर जिस का तूने उन से वा'दा किया है, और हमें क़ियामत के दिन उन की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा।

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ط بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ط

बेशक तू वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता, हम पर अपनी रहमत फ़रमा ऐ सब से बढ़ कर रह़्म करने वाले।

शफ़ाअ़त की बिशारत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम अज़ान सुनो तो उन कलिमात को अदा करो जो **मुअज़्ज़िन** ने कहे फिर मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो फिर वसीले का सुवाल करो। ऐसा करने वाले के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। (مُسلِم ص٢٠٣ حديث٣٨٤مُلَخّصاً)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنز العمال)

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर

وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ط

और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़्दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है और मौत के बा'द उठाए जाने पर।

ईमाने मुज्मल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ

मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने उस के तमाम

اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ ط

अह़काम क़बूल किये ज़बान से इक़रार करते हुए और दिल से तस्दीक़ करते हुए।

पहला कलिमा त़य्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं

وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط

और मैं गवाही देता हूं कि बेशक **मुहम्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ ط

अल्लाह पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है,

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط

गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की तरफ़ से है जो सब से बुलन्द अ-ज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तौहीद

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है,

يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ؕ ذُوالْجَلَالِ

वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी, बड़े जलाल

وَالْاِكْرَامِ ؕ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

और बुज़ुर्गी वाला है, उस के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْۢبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً

मैं **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है, हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया या भूल कर,

سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِيْٓ اَعْلَمُ

छुप कर किया या ज़ाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिस को मैं जानता हूं

وَمِنَ الذَّنْۢبِ الَّذِيْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता, (ऐ **अल्लाह**) बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला

وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

और ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ुव्वत

اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ؕ

अल्लाह ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْـًٔا وَّاَنَا اَعْلَمُ

ऐ **अल्लाह** मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं जान बूझ कर

بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَاۤ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ

और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा

اَلْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ

कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और (बुरी) बिद्अ़त से और चुग़ली से

وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ

और बे ह़याइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया

وَاَقُوْلُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

और मैं कहता हूं **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

100 एक चुप सो सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

20 मुह़र्रमुल ह़राम 1435 सि.हि.
25-11-2013

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया	6
सरकार ने एक बार अज़ान दी	1	अज़ान व इक़ामत के जवाब का त़रीक़ा	7
आज़ान है या अज़ान ?	2	अज़ान के 14 म-दनी फूल	9
अज़ान के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 9 अह़ादीस	2	जवाबे अज़ान के 9 म-दनी फूल	12
		इक़ामत के 7 म-दनी फूल	14
﴾1﴿ क़ब्र में कीड़े नहीं पड़ेंगे	2	अज़ान देने के 11 मुस्तह़ब मवाक़ेअ़	15
﴾2﴿ मोती के गुम्बद	2	मस्जिद में अज़ान देना ख़िलाफ़े सुन्नत है	15
﴾3﴿ गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़	2	सो शहीदों का सवाब कमाइये	16
﴾4﴿ शैत़ान 36 मील दूर भाग जाता है	3	अज़ान से पहले येह दुरूदे पाक पढ़िये	17
﴾5﴿ अज़ान क़बूलिय्यते दुआ़ का सबब है	3	अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	21
﴾6﴿ मुअज़्ज़िन के लिये इस्तिग़फ़ार	3	حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ का मज़ाक़ उड़ाना	21
﴾7﴿ अज़ान वाले दिन अ़ज़ाब से अम्न	3	अज़ान के मु-तअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात की 8 मिसालें	23
﴾8﴿ घबराहट का इ़लाज	3		
﴾9﴿ ग़म दूर करने का नुस्ख़ा	4	अज़ान	24
मछलियां भी इस्तिग़फ़ार करती हैं	4	अज़ान की दुआ़ - शफ़ाअ़त की बिशारत	25
अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत	4	ईमाने मुफ़स्सल - ईमाने मुज्मल	26
3 करोड़ 24 लाख नेकियां रोज़ाना कमाइये	5	शश कलिमे	26

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
تفسیر سورۂ یوسف	فضل نور اکیڈمی گجرات	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
صحیح ابن خزیمہ	المکتب الاسلامی بیروت	تحفۃ المحتاج	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	مجمع الانہر	کوئٹہ
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	فتاوٰی قاضی خان	پشاور
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	درّ مختار و ردّ المحتار	دار المعرفۃ بیروت
تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت	فتاوٰی عالمگیری	دار الفکر بیروت
سنن کبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مراقی الفلاح	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	منح الرّوض الازہر	دار البشائر الاسلامیۃ بیروت
الزہد الکبیر	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
جامع صغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
جامع الحدیث	دار الفکر بیروت	قانون شریعت	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور

नामे रिसाला : फ़ैज़ाने अज़ान
पहली बार : जुमादिल आख़िर **1435** हि., एप्रिल **2014** ई.
ता'दाद : 20,000
नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना**

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़िनीन की ता'दाद

मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **मुअज़्ज़िन** चार थे : ﴾1﴿ हज़रते सय्यिदुना **बिलाल (हबशी)** बिन रबाह़ ﴾2﴿ हज़रते सय्यिदुना **अ़म्र बिन उम्मे मक्तूम** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا येह दोनों **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में ﴾3﴿ हज़रते सय्यिदुना **सा'द** बिन आ़इज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ **कुबा शरीफ़** में और ﴾4﴿ हज़रते सय्यिदुना **अबू मह़ज़ूरा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में अज़ान देते थे।

(اَلْمَوَاهِبُ لِلْقَسْطَلَانِی ج ۱ ص ۵۵۳)

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, टी कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net